जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

बीकानेर

Rashtradoot

फोन:- 2200660 फैक्स : 0151-2527371 वर्ष: 47 संख्या: 326 प्रभात बीकानेर, शनिवार 20 जून, 2026 डाक प.स.बीकानेर/045/2020-22 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रू.

राहुल अब मुस्कुराकर स्वीकार कर रहे हैं कि वे प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार हैं

उनके आत्मविश्वास का प्रतीक है कि अब वो अपना जन्म दिन कांग्रेसियों के साथ मनाने में अटपटा महसूस नहीं करते हैं

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

- पूर्व में राहुल गांधी प्रायः अपने जन्म दिन पर विदेश चले जाते थे, जिसे लेकर राजनीति के प्रति उनकी गंभीरता पर सवालिया निशान लगते थे।
- लेकिन, इस बार राहुल गांधी ने अपने जन्म दिन पर दो घंटे कांग्रेस कार्यालय में बिताए, कार्यकर्ताओं और नेताओं की भारी भीड़ उमड़ी, उत्सव जैसा माहौल देखा गया।
- विपक्ष में भी राहुल के नेतृत्व के प्रति स्वीकार्यता बढ़ रही है। शरद पवार, अब उतने ताकतवर नहीं रहे, वे तो अपनी पार्टी का कांग्रेस में विलय तक करना चाहते हैं।
- राहुल के नेतृत्व के लिए हमेशा चुनौती बनी रहीं, ममता बनर्जी भी चुनाव हारने के बाद अपनी पार्टी को बिखरने से बचाने में जुटी हैं।
- सपा और आरजेडी का नया नेतृत्व, अखिलेश एवं तेजस्वी यादव, राहुल के साथ बेहद सहज नज़र आते हैं।

नई दिल्ली, 19 जून। राहुल गांधी के 56 वर्ष पूरे होने के साथ ही, बीता एक वर्ष राजनीतिक परिदृश्य में कई बड़े बदलाव लेकर आया है। उनकी राजनीतिक यात्रा में मौजूद कई बाधाएं, चाहे कांग्रेस के भीतर हों या विपक्षी खेमे में, अब काफी हद तक दूर होती दिखाई दे रही हैं। वे अब इंडिया गठबंधन का नेतृत्व करने के लिए सबसे अधिक स्वीकार्य चेहरे के रूप में उभर रहे हैं।

राहुल गांधी अक्सर अपने जन्मदिन के अवसर पर विदेश यात्रा पर रहते थे और सार्वजनिक रूप से कम ही दिखाई देते थे। लेकिन इस वर्ष उन्होंने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (एआईसीसी) कार्यालय में लगभग दो घंटे बिताए, जहां उन्होंने नेताओं और कार्यकर्ताओं के बीच जन्मदिन का केक काटा।

अकबर रोड के आसपास का पूरा इलाका गाड़ियों और कांग्रेस कार्यकर्ताओं से खचाखच भरा हुआ था, जिससे सामान्यत: शांत रहने वाले पार्टी कार्यालय में उत्सव जैसा माहौल बन गया था।

विपक्षी राजनीति में भी अब राहुल गांधी के लिए रास्ता काफी हद तक साफ हो गया है और वे ऐसे नेता के रूप में उभर रहे हैं जो पूरे विपक्षी मोर्चे का नेतृत्व कर सकते हैं।

मजबूत मराठा नेता शरद पवार अब राजनीतिक रूप से कमजोर स्थिति में दिखाई दे रहे हैं। यहां तक कि उन्होंने अपनी पार्टी के कांग्रेस में विलय के संकेत भी दिए हैं।

ममता बनर्जी, जो पहले राहुल गांधी को स्वीकार नहीं कर पाती थीं, चुनाव हार चुकी हैं और अपनी पार्टी को टूटने और समाप्त होने से बचाने में लगी हुई हैं। हाल के दिनों में उन्हें सोनिया गांधी के साथ भावुक होते हुए भी देखा गया है। एम. के. स्टालिन, जिन्होंने पहले राहुल गांधी को प्रधानमंत्री पद का दावेदार बताया था, चुनाव हार चुके हैं। वे कांग्रेस द्वारा विजय की पार्टी को समर्थन देने को धोखा बता रहे हैं और इससे नाराज़ भी हैं, लेकिन कांग्रेस और विपक्षी गठबंधन से संबंध तोड़ने को तैयार नहीं हैं।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

फुटपाथ पर सुरक्षित चलना पैदल यात्रियों का मौलिक अधिकार -सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली, 19 जून। उच्चतम न्यायालय ने एक अहम फैसले में कहा है कि फुटपाथ पर सुरक्षित चलना मौलिक अधिकार है। जस्टिस पीएस नरसिम्हा की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि नगर निगम, नगरपालिका और विकास प्राधिकरणों की जिम्मेदारी है कि वे सुरक्षित और स्पष्ट रुप से चिन्हित फुटपाथ उपलब्ध कराएं। अगर ऐसा नहीं किया जाता है, तो नागरिक संवैधानिक और कानूनी उपायों के जरिये मुआवजा मांग सकते हैं।

कोर्ट ने केंद्र सरकार को निर्देश दिया कि वो पैदल यात्रियों के अधिकारों

- यदि सुरक्षित व चिन्हित फुटपाथ उपलब्ध नहीं कराये जाते तो नागरिक मुआवजा मांग सकते हैं।

की रक्षा के लिए अलग कानूनी ढ ांचा तैयार करने पर विचार करे। कोर्ट ने कहा कि सड़कों पर मोटर वाहनों की आवाजारी से पहले पैदल चलने वालों के अधिकारों को महत्व दिया जाना चाहिए। कोर्ट ने मोटर वाहन दुर्घटना से जुड़े एक मामले की सुनवाई के दौरान ये दिशा-निर्देश दिए। मामले में एक पिता ने अपने पांच साल के बेटे को खो दिया था। उच्चतम न्यायालय ने मुआवजे की रकम बढ़ ाकर 11,44,628 रुपये करने का आदेश दिया।

स्टालिन ने भी राहुल गांधी को जन्म दिन की बधाई दी

यह इस बात का प्रतीक है कि विपक्षी राजनीति में राहुल का स्टेटस बढ़ रहा है और स्टालिन का रुतबा घट गया है

-सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

- तमिलनाडु विधानसभा चुनाव में अभिनेता विजय की पार्टी के जीतने के बाद, कांग्रेस ने जिस तरह से विजय को समर्थन दिया और सरकार में शामिल हुई, उस पर स्टालिन काफी नाराज़ थे।
- स्टालिन ने लोकसभा में अपनी पार्टी सांसदों को अलग बिठाने की मांग तक कर डाली और वे इंडिया ब्लॉक की बैठक में भी नहीं आए थे।
- पर, स्टालिन द्वारा राहुल गांधी को जन्म दिन की बधाई देने से लगता है कि वे भले ही नाराज़ हों, पर, विपक्षी गठबंधन में बने रहना चाहते हैं।

नई दिल्ली, 18 जून। तमिलनाडु के पूर्व मुख्यमंत्री और डीएमके प्रमुख एम. के. स्टालिन द्वारा इस वर्ष कांग्रेस नेता राहुल गांधी को दी गई जन्मदिन की शुभकामनाओं में, पिछले वर्ष की तुलना में एक महत्वपूर्ण राजनीतिक कहानी छिपी है।

इस वर्ष स्टालिन ने राहुल गांधी को "विपक्ष के नेता" कहकर संबोधित किया, जबकि 2025 में उन्होंने तत्कालीन तमिलनाडु मुख्यमंत्री रहते हुए "विचारधारा से मेरे भाई" (ब्रदर्स इन आइडियल्स) शब्द का प्रयोग किया था।

राजनीति में एक वर्ष वास्तव में बहुत लंबा समय होता है, और इसे सबसे बेहतर वही लोग जानते हैं, जो इन दोनों नेताओं की तरह, इसके गवाह रहे हैं। इस दौरान काफी कुछ बदल गया है, हालांकि एक हल्की उम्मीद अब भी बनी हुई है क्योंकि स्टालिन धर्मनिरपेक्षता, संघवाद और संवैधानिक मूल्यों की राह पर दृढ़ बने हुए हैं। पिछले वर्ष और इस वर्ष के बीच सबसे बड़ा अंतर हाल ही में हुए विधानसभा चुनावों में डीएमके की हार है।

जब स्टालिन ने पिछले वर्ष राहुल गांधी को जन्मदिन की शुभकामनाएँ दी थीं, तब उन्होंने राहुल को सम्बोधित करते हुए लिखा था, विचारधारा से मेरे भाई, जो खून से नहीं, बल्कि विचार, दृष्टि और उद्देश्य से जुड़े हैं।" उन्होंने आगे लिखा था- "आप इसी तरह दृढ़ रहें और साहस के साथ नेतृत्व करते रहें। एक उज्ज्वल भारत की ओर हमारी इस यात्रा में जीत हमारी होगी। स्टालिन की उस पोस्ट में गर्मजोशी और निकटता झलकती थी।

इसके विपरीत, आज स्टालिन की जन्मदिन शुभकामना में वह गर्मजोशी और निकटता गायब थी। उन्होंने लिखा: माननीय विपक्ष के नेता थिरु. राहुल गांधी को जन्मदिन की शुभकामनाएँ। आपके लिये अच्छे स्वास्थ्य और खुशी की कामना।

दोनों पोस्टों में शब्दों के चयन से कांग्रेस-डीएमके संबंधों की कहानी स्पष्ट होती है। जो पहले व्यक्तिगत और मित्रतापूर्ण था, वह अब औपचारिक और प्रोफेशनल हो गया है, हालांकि दोनों के बीच संचार चैनल को बनाए रखने की इच्छा अभी भी दिखाई देती है।

राहुल गांधी ने अपने उत्तर में डीएमके के प्रति सुलह का संकेत देते हुए मेल-मिलाप का संदेश दिया। स्टालिन का धन्यवाद करते हुए उन्होंने

(शेष पृष्ठ 5 पर)

'राम मंदिर के चढ़ावे की "हैंडलिंग" में भारी गड़बड़ियां हैं'

प्र.मंत्री मोदी के प्रधान सचिव नृपेन्द्र मिश्रा ने कहा, चढ़ावे की "हैंडलिंग" में ना ईमानदारी रखी गई है, ना सतर्कता बरती गई है

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

- इसी बीच उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अंततः इस विवाद पर चुप्पी तोड़ी और कहा कि सच सामने लाने के लिए एसआईटी को 15 दिन का समय दिया जाए।
- इस विवाद को लेकर भाजपा में भारी अफरा तफरी मची है। कांग्रेस और सपा ही नहीं खुद भाजपा के नेताओं ने राम मंदिर के चढ़ावे के प्रबंधन में भारी गड़बड़ी का आरोप लगाया है। सांसद बृज भूषण शरण सिंह ने कहा, उन्हें चढ़ावे मेंक चोरी की जानकारी है, एक अन्य नेता राजेश सिह ने इस बारे में प्र.मंत्री को पत्र लिखा।
- हालांकि, राम मंदिर ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने कहा कि फंड चोरी का कोई प्रमाण नहीं मिला है।

नई दिल्ली, 19 जून। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को आखिरकार राम मंदिर के दान में कथित गबन के आरोपों पर अपनी चुप्पी तोड़ी। उन्होंने कहा कि सच्चाई सामने लाने के लिए विशेष जांच दल (स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम-एसआईटी) को 15 दिन का समय दिया जाए। लेकिन, राम मंदिर निर्माण समिति के अध्यक्ष नृपेन्द्र मिश्रा, जो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के पूर्व प्रधान सचिव रह चुके हैं, ने मंदिर प्रबंधन व्यवस्था में पूरी तरह सुधार की मांग की है। उनका कहना है कि दान राशि के कथित दुरुपयोग के विवाद ने निगरानी और जवाबदेही की गंभीर कमियों को उजागर कर दिया है।

राज्य विधानसभा चुनाव अब केवल कुछ ही महीने दूर हैं और अयोध्या मंदिर से जुड़ा यह विवाद

(शेष पृष्ठ 5 पर)

शासन सचिव अंबरीश कुमार पर दुबारा जमानती वारंट जारी

जयपुर, 19 जून। राजस्थान सिविल सेवा अपीलीय अधिकरण ने खाद्य और नागरिक आपूर्ति विभाग के शासन सचिव अंबरीश कुमार को दूसरी बार जमानती वारंट से तलब किया है।

- गत 8 जून को पहला जमानती वारंट जारी हुआ था, पर कार्यालय बंद होने से कारण तामील नहीं हो पाई।

अधिकरण की न्यायिक सदस्य पूनम दरगन और सदस्य प्रकाश चंद्र शर्मा की बेंच ने यह जमानती वारंट सरोज मीणा की ओर से दायर प्रार्थना पत्र पर सुनवाई करते हुए जारी किया गया।

अदालत ने सम्मन के बावजूद पेश नहीं होने पर अंबरीश कुमार को 8 जून

(शेष पृष्ठ 5 पर)

अमेरिका-ईरान शांति वार्ता फेल हुई

स्विट्ज़रलैण्ड में शांति पैक्ट पर साईन होने वाले थे, लेकिन ईरान के पीछे हटने से अमेरिका के उपराष्ट्रपति जे.डी. वैंस ने जिनेवा दौरा रद्द किया

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

- हिज़्बुल्लाह ने गुरुवार को एक हमले में चार इज़रायली सैनिकों को मार दिया, उसके बाद इज़रायल में भारी गुस्सा है और जवाबी कार्यवाही में लेबनान के 18 नागरिक मारे गए।
- इन हमलों को ईरान ने शांति पैक्ट का उल्लंघन बताया और लेबनान पर हमला रोकने को वार्ता की पहली शर्त करार देते हुए जिनेवा वार्ता से खुद को दूर कर लिया।
- क्षेत्रीय राजनैतिक विश्लेषकों का कहना है कि इज़रायल और हिज़्बुल्लाह दोनों को लगता है कि शांति वार्ता से उन्हें जानबूझकर अलग रखा गया है। इज़रायल चाहता था कि उसे वार्ता मे शामिल किया जाए, वहीं हिज़्बुल्लाह को भी लगता है कि शांति वार्ता में ईरान ने उसके हितों की अनदेखी की है।
- शांति वार्ता फेल होने से एक बार फिर वैश्विक अर्थव्यवस्था में अनिश्चितता का माहौल बन गया।
- बताया जाता है कि 14 सूत्रीय शांति समझौते में ईरान द्वारा न्यूक्लियर कार्यक्रम आगे नहीं बढ़ाने, ईरानी अर्थव्यवस्था को मजबूत करने, अमेरिका द्वारा सभी प्रतिबंध हटाने जैसे बिंदू शामिल हैं।

नई दिल्ली, 19 जून। एक छोटे से आतंकी समूह, हिज़्बुल्लाह, के कारण फारस की खाड़ी में युद्ध समाप्त करने और वैश्विक अर्थव्यवस्था को सामान्य स्थिति में लाने के लिए अमेरिका-ईरान समझौते को अंतिम रूप देने की जो प्रक्रिया चल रही है, उसमें अवरोध आ गया है।

अमेरिकी उपराष्ट्रपति जे. डी. वेंस स्विट्ज़रलैंड जाकर तकनीकी वार्ताओं को अंतिम रूप देने वाले थे, ताकि अमेरिका-ईरान समझौता पूरा किया जा सके। लेकिन लेबनान में हिज़्बुल्लाह द्वारा की गई हिंसा ने इस समझौता प्रक्रिया को बाधित कर दिया।

हिज़्बुल्लाह कई देशों में फैला एक मिलिशिया ग्रुप है, जिसने वर्षों से लेबनानी सरकार को चुनौती दे रखी है और इसे मध्य पूर्व क्षेत्र में ईरान के गुप्त और कभी-कभी खुले अभियानों का विस्तार माना जाता है। ईरान हिज़्बुल्लाह को धन, संसाधन और हथियारों से सहायता देता रहा है।

हिज़्बुल्लाह ने गुरुवार को हमला किया, जबकि वार्ताएँ निर्धारित की जा रही थीं, हमले में लेबनान में चार इज़रायली सैनिकों की मौत हो गई। जवाब में, इज़राइल ने सैन्य कार्रवाई की,

(शेष पृष्ठ 5 पर)